International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 1, January 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भारतीय साहित्य में रुपक- परम्परा

डॉ श्यामलेंदु रंजन, मीडियकर्मी
पता -308 ,गौड़ गंगा 2 ,वैशाली सेक्टर 4
गाज़ियाबाद , उत्तर प्रदेश

सभ्यता ,संस्कृति और साहित्य के आयात और निर्यात पर वर्षों से भ्रम की स्थिति रही है। किसी ने काव्य नाटक को पूर्णतया भारतीय विधा माना है तो पश्चयात विद्वानों एवं उनके समीकरण सिद्ध कुछ भारतीय विद्वानों ने काव्य नाटक को आयातित मानने से गुरेज नहीं करते। वैसे में हिंदी काव्य रूपक -परम्परा और छायावाद विषय पर शोध करते हुए मैंने भारतीय काव्य -रूपक को कुछ ऐसे समझा है। साहित्य में रूपक शब्द का प्रयोग अनेक रूपों में होता है। रूपक अपने आप में एक स्वतंत्र अर्थालंकार है। यह एक सौन्दर्य बोध का अलंकार है जिसमें अति साम्यता के कारण प्रस्तुत में अप्रस्तुत का आरोप किया जाता है। प्राचीन आचार्यों ने इसकी अनेक तरह से व्याख्या की है। दण्डी ने "उपमानः उपमेय के भेद के तिरोभाव हो जाना पर रुपक अलंकार माना है।

वामन के मतानुसार, "उपमान के साथ उपमेय के गुणों का साम्य होने पर अभेद का आरोप रूपक अलंकार हैं। मम्मट के अनुसार, "उपमेय-उपमान का अभेद ही रूपक अलंकार है। सौन्दर्य बोध की विशेषता के कारण कवियों का यह बहुत प्रिय अलंकार रहा है। आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक के सभी कवियों का यह बहुत प्रिय अलंकार हैरूपक शब्द का प्रयोग अन्य अनेक अर्थों में भी हुआ है।

अंग्रेजी के "एलिगिरी का यह पर्यायवाची है। (४) यह एक प्रकार का कथा रूपक है। इसमें कथा दो अर्थों को लेकर चलती है। (१) कथा की इतवृत्तात्मकता के कारण सतही और प्रत्यक्ष होता है। (२) जीवन के असामान्य तत्व से संबंधित होने के कारण गूढ और अप्रत्यक्ष होता हैदृश्य काव्य को भी रूपक कहते हैं।

"रूपरोपात्तुरुपकम्क क अर्थात किसी पात्र विशेष का आरोप करके रंगमंच पर किया जानेवाला अभिनय रूपक है। भारतीय साहित्य में रूपक परम्परा के आदि ग्रंथ वेद है। ऋगवेद में ईश्वर, जीव और प्रकृति सृष्टि के इन तीन रुपों को लेकर सुन्दर मंत्र का निर्माण किया गया है यह मंत्र रूपक का सुन्दर चित्र है - "द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते। तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्यनश्ननन्यो अभिचाकशीति। (५) अर्थात दो मित्र पक्षी एक ही वृक्ष पर साथ - साथ रहते है, उसमें से एक पक्षी स्वदिष्ट फलों को खाता है और दूसरा न खाता हुआ साक्षी मात्र रहता हैइसी तरह यजुर्वेद में सामाजिक वर्ण-व्यवस्था को रूपक के आवरण में प्रस्तुत किया गया है। मन्त्र इस प्रकार का है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 1, January 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

"ब्राह्मणोस्य मुखमासीद बाहू राजन्य कृतः
उरू तदस्य यवैश्यः पदभ्यां शूद्रो अजायत।। (६)

अर्थात मनुष्य शरीर में मुख जिस काम को करता है संसार में वही काम ब्राह्मण करता है। शरीर के बाह का कार्य संसार में क्षत्रिय का हैशरीर की जंघा का काम संसार में वैश्य करता है। शरीर के पैरों का काम संसार में शूद्रों से पूरा होता है

इस प्रकार चारों वेदों की शाखाओं में जीवन और जगत के मार्मिक तथ्यों को रूपक के आवरण में प्रतिपादित किया है। उपनिषदों का रूपक मानो प्राण है
कठोपनिषद में जीवन सत्य को इस तरह से व्यक्त किया गया है। -

"आत्मानं रथिनं विध्दि शरीरं रथमेव तु
बुध्दि तु सारथ (वध्दि मनः प्रग्रहमेव च।
इंद्रियाणि हयाना हुर्विषयास्तेषु गोचरान्कड्क।। (७)

अर्थात् इस शरीर रूपी रथ का स्वामि आत्मा है। बुध्दि इस रथ की सारथी है। सारथी के हाथ में मन रूपी बागडोर है और वह इन्द्रिय रूपी घोडों को हाँकता है, इन्द्रियों के चलने के मार्ग विषय है। पुराणों में भी जीवन के गूढ रहस्यों को रूपक द्वारा समझाया गया है। रुपक पध्दति में जहाँ विचारों के लिये जीवन के गूढतम रहस्यों को उत्तम आवरण में प्रस्तुत किया है, वहाँ साधारण मनुष्यों के लिये भी सरस एवं आकर्षक शैली में रूपक को समझाया गया है। भारतीय साहित्य की गौरवशाली रूपक परम्परा को देखकर बेवर ने भावुकता में आकर वाल्मीकि रामायण को भी एक रूपक कथा - काव्य ही मान लिया है। रामायण के प्रथम श्लोक को रामायण का सार मानते हुए अनेक विद्वानों ने भी उसे श्रेष्ठ रूपक माना है। वह श्लोक इस प्रकार का

"मा निषाद प्रतिष्ठान्त्वमंगमः शाखती समाः
यत्क्रौंचमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्। (८)

अर्थात् कवि कहता है - हे ब्याध! काम से अभिभूत होकर तूने क्रौंच की जो डी में से एक का वध कर दिया, निश्चित ही तुमको प्रतिष्ठा न मिलेगी, यहाँ बधिक - रावण और क्रौंच मिथुन की जोडी सीता तथा राम को माना है -

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 1, January 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

रामायण के बाद महाभारत ही एक ऐसा एतिहासिक और साहित्यिक ग्रंथ हैं, जिसमें अनेक कथाएँ रूपक के आवरण में मिलती है। महाभारत के समय देश की राजनैतिक परिस्थिति अत्यंत क्षुब्ध, अस्त-व्यस्त और स्वार्थपूर्ण थी। इसी परिस्थिति का चित्रण महाभारत की बकासुर वध कथा के भीतर रूपक के माध्यम से किया गया हैयहाँ रूपक द्वारा यह बताया गया है कि अधिकार और शक्ति के मद में चूर व्यक्ति अपने जैसे साथियों को एकत्रित करके किस प्रकार दूसरों को पीडा देता है और देश तथा समाज की शांति - व्यवस्था को भंग कर देता है।

संस्कृत साहित्य में तो रूपक-परम्परा की मानो अखण्ड धारा ही बहने लगी थी। जीवन के गूढ रहस्यों को सरल एवं स्पष्ट करने के लिए संस्कृत में कथा - साहित्य के रूप में रुपक-परम्परा का आरंभ हुआ था। पंचतन्त्र और हितोपदेश इसी परम्परा की कड़ियाँ है। इसके अतिरिक्त संस्कृत का प्रबोध चन्द्रोदय नाटक पूर्णरूप से रूपक ही है

हिन्दी साहित्य में आरंभ से ही रूपक का प्रचुर प्रयोग हुआ है। वीरगाथा काल के पहले, सिध्दों और नाथों का साहित्य मुख्यतः रूपक शैली में ही लिखा हआ मिलता है। वे शरीर के भीतर चक्र,कमल शून्य देश आदि की कल्पना करके उसकी साधना के रहस्य को रूपक के माध्यम से समझाया करते थे।

मध्य युग के निर्गुण सन्तों ने भी रहस्यात्मक उक्तियों के लिये रूपक-परम्परा को ही अपनाया है। इनकी उक्तियों का सांकेतिक अर्थ अध्यात्म से संबंधित था । सूफी संतों ने लौकिक आख्यानों के माध्यम से अलौकिक भावों की व्यंजना की थी। जायसी ने आत्मा और परमात्मा के संबंध को मेघ और समुद्र का संबंध माना है। पद्मावत में भौतिक प्रेम द्वारा आध्यात्मिक प्रेम का संकेत इस तरह से दिया है जायसी ने।

"तन चितउर,मन राजा किन्हा । हिय सघल, बुधि पदमिन चीन्हा, गुरु सूआ जेहि पंथ दिखावा । बिन गुरु जगत को निरगुन पावानागमती यह दुनिया धंधा। बांचा सोई न एहि चित बंधा, राघव दूत सोई शैतानू । माया अलाउद्दीन सुलतान् । (९)

कबीर ने रूपक का प्रयोग अनेक तरह से किया है। कहीं - कहीं गहन विषय और गंभीर भावों के कारण कबीर के रूपक अस्पष्ट भी हो गये है। कबीर के रूपक मुख्यतः दो रूपों में उपलब्ध होते हैं। एक उलटबासियों के रूप में, तो दूसरा आश्चर्यजनक घटनाओं की सृष्टि के लिये। कबीर का काव्य रहस्य रूपकों से भरा पड़ा है। नीचे का पद कबीर के रूपक का उत्कृष्ट उदाहरण है।

"लाली मेरे लाल की, जित दे तित लाल
लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल।। (१०)

आधुनिक युग में भी हिन्दी के अनेक कवियों ने रूपक का सुन्दर प्रयोग किया है। किसी विषय को समझाने अथवा उपदेश को सरस बनाने के लिये रूपक - पद्धति को अपनाया गया है। प्रसाद का "एक घुट और पन्त का "ज्योत्स्ना नाटक इसी कोटि के है। प्रसाद का "कामना नाटक भी रूपक शैली की उत्कृष्ट रचना है। इसके अतिरिक्त रूपक- पद्धति में ऐसी भी कथा अपनायी जाती है, जिसके पात्र मानव होते हैं और घटनाएँ भी मानव - स्वभाव-सुलभ ही होती है। प्रसाद की "कामायनी इस तरह के रूपक की आधुनिक कड़ी है। इस प्रकार से स्पष्ट हो जाता है कि भारतीय साहित्य में रूपक परम्परा की लम्बी परम्परा रही है और भारतीय आधुनिक नाटक इसी की अगली कड़ी हैं।

संदर्भ सूचि

काव्यादर्श : २११४ तथा ६६ २.

काव्यालंकार सूत्रवृत्ति : ४१३-६

काव्यप्रकाश : १० १९३

कामायनी इतिहास और रूपक, लेखक : सुशीला भारती पृ.सं. ३२ ५.

ऋग्वेदः १/१६४ १२०

यजुर्वेदः ३१/११

कठोपनिषद : ३१५७-५८

कामायनी इतिहास और रूपक, लेखक : सुशीला भारती पृ. सं. ३७

कामायनी इतिहास और रूपक, लेखक : सुशीला भारती पृ. सं. ३९

कामायनी इतिहास और रूपक लेखक : सुशीला भारती प.सं.४०

नाट्यशास्त्र - भरत मुनि